Rekha Rekha

DOC-20260731-WA0007.pdf

AS

Rekha

National Institute of Technology Delhi

Document Details

Submission ID

trn:oid:::1:3620299765

Submission Date

Jul 31, 2026, 3:22 PM GMT+5:30

Download Date

Jul 31, 2026, 3:30 PM GMT+5:30

File Name

DOC-20260731-WA0007.pdf

File Size

420.9 KB

9 Pages

3,211 Words

7,256 Characters

2% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text

Top Sources

2% Internet sources

0% Publications

0% Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

2% Internet sources
0% Publications
0% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

1 Internet
fliphtml5.com **<1%**

2 Internet
ebin.pub **<1%**

3 Internet
3lib.net **<1%**

4 Internet
hi.unionpedia.org **<1%**

Anjali Rani

Resarch scholar

Delhi University Sanskrit department

महाभारत एवं अर्थशास्त्र में वर्णित राजनीति की प्रासंगिकता

शोध सारांश :-

प्रस्तुत शोध-पत्र में महाभारत एवं कौटिलीय अर्थशास्त्र में प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धान्तों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य महाभारत एवं अर्थशास्त्र में वर्णित राजनीति, राजधर्म, दण्डनीति, विदुरनीति, सप्ताङ्ग सिद्धान्त, मण्डल सिद्धान्त, षाड्गुण्य नीति, सुशासन, कूटनीति, गुप्तचर व्यवस्था, सैन्य रणनीति के सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए समकालीन शासन-व्यवस्था में उनकी प्रासंगिकता को ज्ञात करना है। प्राचीन ग्रन्थों में महाभारत भारतीय संस्कृति का विश्व कोष कहा जाता है। महाभारत की महानता ***"यन्न भारते तन्न अन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्" से*** समझी जा सकती है। महाभारत का मुख्य विषय धर्म, न्याय, युद्ध,राजनीति, लोक कल्याण आदि माना जाता है। महाभारत में कौरवों एवं पांडवों के मध्य युद्ध दिखाकर अधर्म की धर्म पर विजय का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। जबकि कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र राज्य, प्रशासन,राजनीति, कूटनीति, सैन्य रणनीति, गुप्तचर प्रणाली, मण्डल सिद्धांत पर आधारित राजनीतिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करने वाला एक व्यापक ग्रन्थ है। महाभारत एवं अर्थशास्त्र में वर्णित सिद्धांत समकालीन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था,सुशासन,नैतिक उत्तरदायित्व, पारदर्शिता आदि की स्थापना में उपयोगी सिद्ध होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन राजनीतिक परंपरा के द्वारा समकालीन राजनीति में आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

कूट शब्द :- राजनीति, दण्डनीति, सुशासन, गुप्तचर, मण्डल सिद्धांत, प्रशासनिक दक्षता।

भूमिका :-

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की ज्ञान परम्परा अत्यंत समृद्ध रही है। इसी ज्ञान परम्परा में वेद , दर्शन, रामायण,महाभारत,अर्थशास्त्र तथा राजनीति ग्रंथो का प्रतिपादन हुआ तथा उनमें विभिन्न राजनीतिक विषयों पर गहन एवं सुव्यवस्थित चिंतन प्रस्तुत किया गया है।भारतीय मनीषियों ने राजनीति को केवल शासन-सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर लोक कल्याण,धर्म रक्षा ,न्याय-स्थापना तथा सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने का माध्यम स्वीकार किया है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन करने के लिए महाभारत एवं अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण ग्रन्थ माने जाते हैं ये भारतीय राजनीतिक शक्ति एवं सैन्य रणनीति का प्रतिपादन करने वाले महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। महाभारत ऐतिहासिक महाकाव्य ही नहीं

अपितु राजनीतिक शासन व्यवस्था की शिक्षा देने वाला उच्च कोटि का ग्रन्थ है । राजनीति का विस्तारपूर्वक वर्णन होने के कारण महाभारत को **"राजनीतिशास्त्र"** ग्रन्थ भी कहा जा सकता है। महर्षि व्यास का राजनीतिक चिन्तन महाभारत के शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, उद्योगपर्व,भीष्मपर्व की व्याख्या में मिलता है। उद्योगपर्व में विदुर द्वारा दिया गया धृतराष्ट्र को राजधर्म पालन का उपदेश राजा तथा प्रजा दोनों के कल्याण एवं राष्ट्रीय उन्नति में सहायक सिद्ध होता है।

दूसरी ओर कौटिल्य विरचित अर्थशास्त्र भारतीय राजनीति के लिए सबसे प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक ग्रन्थ माना जाता है। अर्थशास्त्र केवल अर्थनीति का ही नहीं अपितु राज्य व्यवस्था, प्रशासन, कर व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, सैन्य नीति, गुप्तचर व्यवस्था, मण्डल सिद्धान्त का निरूपण करने वाला एक व्यापक ग्रन्थ है। कौटिल्य का राजनीतिक दृष्टिकोण यथार्थवादी माना जाता है। जिसमें राज्य सुरक्षा और शान्ति सर्वोपरि है। कौटिल्य ने सप्तांग सिद्धान्त,मण्डल सिद्धांत तथा षाड्गुण्य नीति जैसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिनकी प्रासंगिकता समकालीन युग में प्रत्यक्षत: देखी जा सकती है। उपर्युक्त दोनों ही ग्रन्थ भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण आयाम रहे हैं।एक और जहां महाभारत में राजनीति के नैतिक पक्ष को प्रस्तुत किया गया है वहीं दूसरी ओर अर्थशास्त्र में व्यावहारिक स्वरूप का प्रतिपादन किया गया है।यद्यपि दोनों ग्रन्थो की दृष्टि भिन्न-भिन्न प्रतीत होती है तथापि दोनों ही ग्रन्थो का लक्ष्य राष्ट्र उन्नति,सामाजिक व्यवस्था व शांति स्थापित करना है।

अर्थशास्त्र में राजनीति का स्वरूप

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र प्राचीन भारतीय राजनीति का वर्णन करने वाला सर्वाधिक व्यवस्थित ग्रन्थ है। कौटिल्य विरचित अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण,150 अध्याय,180 प्रकरण तथा लगभग 6000 श्लोक समाहित है।अर्थशास्त्र में समाहित विषयों की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी देखी जा सकती है। कौटिल्य का राजनीतिक दृष्टिकोण व्यावहारिक एवं यथार्थवादी होने के कारण उन्हें भारत के श्रेष्ठ राजनीतिक विचारक के रूप में जाना जाता है।

- **राज्य की उत्पत्ति एवं उद्देश्य**

कौटिल्य के अनुसार कोई भी राज्य है तब शक्तिशाली बन सकता है जब राजा,मन्त्री, अमात्य, सेना,दुर्ग,कोष आदि सशक्त हो। प्रस्तुत विचार को उन्होंने सप्तांग सिद्धांत के माध्यम से प्रस्तुत किया है -

स्वाम्यमात्यजनपददुर्गकोषदण्डमित्राणि प्रकृतयः।

(अर्थशास्त्रम् 6.1.1)

अर्थात् स्वामी (राजा), अमात्य (मन्त्री), जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड तथा मित्र ये राज्य के सात अंग हैं।

4 इन्हें राज्य की सात प्रकृति के नाम से भी जाना जाता है। यह सिद्धान्त समकालीन राजनीतिक व्यवस्था के लिए अत्यन्त प्रभावी माना जाता है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की उत्पत्ति का मुख्य उद्देश्य मत्स्य न्याय को समाप्त करना था। मत्स्य न्याय की अवस्था में शक्तिशाली शासक दुर्लभ को सताने लगता हैं इसलिए मत्स्य न्याय को समाप्त कर प्रजा को सुरक्षा,शांति प्रदान करना ही राजा का परम कर्तव्य माना गया है।

- **सुशासन की अवधारणा**

कौटिल्य का मत है की शासन प्रजा केन्द्रित होनी चाहिए। यथा -

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।

नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥[1]

अर्थात् प्रजा के सुख में ही राजा का सुख होता है, तथा प्रजा के हित में ही राजा का हित बताया गया है। राजा को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जो राजा को स्वयं प्रिय हो अपितु प्रजा को प्रिय लगने वाले और प्रजा हित के लिए ही कार्य करना चाहिए। शासन को चलाने वाला राजा उच्चकुल में उत्पन्न,उत्साही,गुणवान,शक्तिशाली आदि गुणों से युक्त होना चाहिए। इसी प्रकार कौटिल्य ने राजा के कार्यों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है ताकि शासन व्यवस्था सुचारू रूप से चले।

प्रशासनिक दक्षता एवं भ्रष्टाचार नियन्त्रण

कौटिल्य नें प्रशासनिक दक्षता को राज्य की सफलता का मूल आधार माना है।उन्होंने अमात्य,मन्त्री,पुरोहित, गुप्तचर आदि की नियुक्ति विभिन्न गुणों एवं योग्यता के आधार पर करने का निर्देश दिया है। भ्रष्टाचारी अधिकारियों के विषय में वर्णन करते हुए कहा है -

मत्स्या यथान्तःसलिले चरन्तो ज्ञातुं न शक्याः सलिलं पिबन्तः ।

युक्तास्तथा कार्यविधौ नियुक्ता ज्ञातुं न शक्या धनमाददानाः ॥[2]

अर्थात् जिस प्रकार जलाशय में स्थित है मछली कितना जल पीती है यह पता लगाना कठिन है उसी प्रकार शासन के अधिकारी कितना धन ग्रहण करते हैं यह पता लगाना भी है अत्यन्त कठिन है। इसी कारण से कौटिल्य ने लेखापरीक्षा,निरीक्षक, गुप्त जांच आदि व्यवस्थाओं का विधान किया था। कौटिल्य की प्रशासनिक व्यवस्था वर्तमान के "**गुड गवर्नेंस**" मॉडल पर आधारित कहीं जा सकती है।

- **गुप्तचर व्यवस्था**

कौटिल्य ने राज्य की सुरक्षा एवं शत्रुओं की गतिविधियों को जानने के लिए गुप्तचरों की नियुक्ति आवश्यक मानी है। गुप्तचर को शासन का नेत्र कहा गया है। मुख्य रूप से अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का उल्लेख मिलता है संस्थागत एवं संचारी।

उपधाभिः शुद्धामात्यवर्गो गूढपुरुषानुत्पादयेत्

कापटिकोदा-स्थितगृहपतिवं देहक

तापसव्यञ्जनान् सत्रितीक्ष्णरसदभिक्षुकोश्च।[3]

---

[1] अर्थशास्त्रम् 1/14/10

[2] अर्थशास्त्रम् 2/25/16

[3] अर्थशास्त्रम् 1/6/1

उन्होंने गुप्तचारों को केवल राज्य की गतिविधियों पर दृष्टि रखने का माध्यम न बताकर राज्य की सुरक्षा एवं राज्य प्रबंधन का माध्यम भी कहा है । आधुनिक RAW, CBI, CIA एजेंसियां कौटिल्य की गुप्तचर प्रणाली पर आधारित है।

- **षाड्गुण्य नीति एवं मण्डल सिद्धान्त**

3 कौटिल्य ने पड़ोसी राज्यों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए मण्डल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। मण्डल 12 राज्यों का एक समूह होता है । मण्डल सिद्धान्त में एक ऐसा शक्तिशाली राज्य होता है जो केंद्र में होता है और अपनी छोटे पड़ोसी राज्यों को अपने राज्य में मिलने के लिए तत्पर रहता है।कौटिल्य की यही कूटनीति विश्व में विख्यात रही है। कौटिल्य के अनुसार जो राजा अमात्य, मन्त्री, सेना,कोष आदि से युक्त तथा राजनीति के गम्भीर विषयों को जानने वाला होता है उसे विजिगीषु कहते हैं।विजिगीषु राजा के चारों ओर के राजा शत्रु प्रकृति के होते हैं तथा उस राज्य से सटे हुए राजा मित्र कहे जाते हैं।

राजा आत्मद्रव्यप्रकृतिसम्पन्नो नयस्याधिष्ठानं विजिगीषुः । तस्य समन्ततो मण्डलीभूता भूम्यनन्तरा अरिप्रकृतिः । तथैव भूम्येकान्तरा मित्र-प्रकृतिः ।[4]

अरिसम्पद्युक्तः सामन्तः शत्रुः । व्यसनी यातव्यः । अनपाश्रयो दुर्बलाश्रयो वोच्छेदनीयः । विपर्यये पीडनीयः कर्शनीयो वा । इत्यरिविशेषाः ।[5]

तस्मान्मित्रमरिमित्रं मित्रमित्रम् अरिमित्रमित्रं चानन्तर्येण भूमीनां प्रसज्यते पुरस्तात् ।[6]

कौटिल्य की विचारधारा यह भी है कि राजा को सदैव अपने शत्रुओं पर निगरानी रखनी चाहिए यदि शत्रु आश्रयहीन,दुर्बल, व्यसनी दिखाई दे तो आक्रमण कर शत्रु की सेना, कोष आदि को क्षति पहुंचानी चाहिए। कौटिल्य की नीति में हमें यह भी ज्ञात होता है की शत्रु का शत्रु मित्र होता है एवं मित्र का शत्रु अपना भी शत्रु होता है। कौटिल्य ने षाड्गुण्य नीति का प्रतिपादन किया है तथा षाड्गुण्य नीति में छह उपाय बताए हैं-**सन्धिविग्रहासनयानद्वैधीभावाः षाड्गुण्यमित्याचार्याः ।**[7]

महाभारत में भी षाड्गुण्य की नीति के महत्व को बताते हुए राज्य के लिए आवश्यक माना है।

सन्धिर्विग्रह आसनं यानं संश्रय एव च।

द्वैधीभावस्तथैव षाड्गुण्यमिति कीर्तितम्॥

इन छह उपायों के माध्यम से राज्य अपनी विदेश नीति का निर्धारण करता है।

महाभारत में राजनीति का स्वरूप

4 अर्थशास्त्रम् 6/97/8

5 अर्थशास्त्रम् 6/97/9

6 अर्थशास्त्रम् 6/97/10

7 अर्थशास्त्रम् 7/98/2

1 महाभारत प्राचीन भारतीय राजनीति को जानने के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। यह एक आख्यान या महाकाव्य ही नहीं अपितु मानव जीवन के विविध आयामों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ है चाहे वे आयाम राजनीतिक,सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,सांस्कृतिक,पारिवारिक आदि हो। विशेषत: महाभारत के शान्तिपर्व,अनुशासनपर्व,उद्योगपर्वमें राजनीतिक, राजधर्म,दंड नीति,न्याय, कूटनीति का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।

● महाभारत में राजधर्म की अवधारणा

राजधर्म से अभिप्राय है राजा का धर्म। यह षष्ठी तत्पुरुष समास से निष्पन्न होता है राज्ञ:धर्म =राज धर्म । प्राचीन काल में राजा को ही शासन व्यवस्था का मुख्य आधार माना जाता था। महाभारत के शान्तिपर्व में युधिष्ठिर भीष्म से राजधर्म जानने की जिज्ञासा प्रकट करते हैं-

राजधर्मान्विशेषेण कथयस्व पितामह ।

सर्वस्य जीवलोकस्य राजधर्माः परायणम्।।

तब भीष्म पितामह ने राजधर्म का वर्णन करते हुए कहा कि वह सभी धर्मों में श्रेष्ठ है क्योंकि राजधर्म का उचित पालन करने से ही ब्राह्मण, क्षेत्रिय, वैश्या,शूद्र चारों वर्णों की सुरक्षा निर्धारित होती है।राजधर्म ही सम्पूर्ण जगत का मूल है वही इस सम्पूर्ण संसार में व्याप्त हैं -**सर्वो हि लोको नृप धर्ममूलः।**

वस्तुतः राजा वही है जिसके राज्य में प्रजा सुखपूर्वक जीवन यापन करती हैं तथा प्रजा का सुख एवं हित जाने वाला राजा ही चिरकाल तक यश प्राप्ति करता है। इसी प्रसंग में भीष्म कहते हैं -

राजा प्रजानां प्रथमं शरीरम्।

प्रजाश्च राज्ञोऽप्रतिमं शरीरम्।।[8]

राजा एवं प्रजा एक दूसरे के पूरक एवं अभिन्न अंग है राजा प्रजा का प्रधान शरीर है, वही प्रजा भी राजा का अनुपम शरीर है,राजा के बिना राज्य एवं प्रजा का कोई अस्तित्व नहीं इस प्रकार प्रजा के बिना भी राजा का कोई अस्तित्व नहीं होता है। इस प्रकार महाभारत में राजधर्म को केवल शासन -प्रणाली ही नहीं अपितु नैतिक उत्तरदायित्व के रूप में प्रकट किया गया है।

● महाभारत में दण्डनीति का महत्त्व

राज्य की उत्पत्ति के साथ ही दण्ड की उत्पत्ति स्वीकार की जाती है।मनुस्मृति, नारदस्मृति,कौटिल्य अर्थशास्त्र, महाभारत में दण्ड नीति का वर्णन प्राप्त होता है। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है सृष्टि के प्रारम्भ में मानवता अपने चरमोत्कर्ष पर विद्यमान थी। उस समय मनुष्य में स्वाभाविक रूप से न्याय की समझ और आत्म-अनुशासन विद्यमान था। जहां न तो कोई राज्य था, न राजा था, न ही दण्ड था, न ही क़ोई दण्ड देने

[8] महाभारतम्, शान्तिपर्व 67/59

वाला अधिकारी। स्वयं प्रजा ही एक- दूसरे के कल्याण एवं रक्षा में तत्पर रहती थी।वही मनुस्मृति में विद्वानों ने दण्ड को धर्म स्वीकार किया गया है-

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।

दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः॥[9]

अर्थात् दण्ड ही समस्त प्रजाओं को अनुशासित करता है, दण्ड ही उनकी रक्षा करता है और जब सभी सो जाते हैं तब भी दण्ड जाग्रत रहता है। विद्वान लोग दण्ड को ही धर्म का स्वरूप मानते हैं।

महाभारत के अनुसार दण्ड का उद्देश्य प्रतिशोध नहीं, बल्कि न्याय की स्थापना करना है। किरातार्जुनीयम् में भारवी नें दुर्योधन की प्रशासनिक नीतियों और निष्पक्ष न्याय-व्यवस्था का वर्णन सम्यक रूप से करते हुए कहा है राजा अपने शत्रुओं या अपने पुत्र में भेद किए बिना धर्म की रक्षा के लिए समान रूप से दण्ड का प्रयोग करता है।

वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः ।

गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ।।[10]

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि समकालीन न्यायपालिका, पुलिस व्यवस्था तथा दण्ड संहिता इसी सिद्धान्त पर आधारित हैं।

- **विदुरनीति एवं प्रशासनिक नैतिकता**

महाभारत के उद्योगपर्व में अध्याय (33 से 40) में विदुर द्वारा राजा धृतराष्ट्र को दिया गया उपदेश"विदुरनीति"के नाम से विख्यात है। राज्य -प्रबंधन, प्रशासन, राजनीति से सम्बन्धित अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए हैं। विदुर नें एक कुशल शासक के गुणों का वर्णन करते हुए कहा है शासक सत्यवादि,आत्मसंयमी,दूरदर्शिन,न्यायप्रिय,विनम्र, परामर्शप्रिय होना चाहिए।

विदुर कहते हैं- जिस सभा में ज्ञानी एवं अनुभवी व्यक्ति उपस्थित नहीं होते उस सभा को सभा की नहीं दी कहा जा सकता, इसी प्रकार जो वृद्धजन धर्म का उपदेश नहीं देते उन्हें वास्तव में वृद्ध नहीं कहा जा सकता यथा -

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा न ते वृद्धा ये न वदन्ति धर्मम् ।

नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम् ॥[11]

- **धर्म और राजनीति का सम्बन्ध**

[9] महाभारतम्, शान्तिपर्व 15/30

[10] किरातार्जुनीयम् 1/13

[11] महाभारतम्, उद्योगपर्व 35/58)

चार पुरुषार्थों में प्रथम गणना धर्म की होती है, यह भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। धर्म से अभिप्राय किसी व्यक्तिविशेष या संप्रदाय से नहीं बल्कि न्याय,सत्यपालन,कर्तव्य से लिया गया है। जैसा कि महाभारत में कहा गया है-

धारणाद्धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः यः स्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः[12]

अर्थात् जो संपूर्ण संसार को धारण करे वहीं धर्म है। राजा का प्रमुख कर्तव्य धर्म की रक्षा करना है ऐसा मनुस्मृति में वर्णित है-

धर्मो रक्षति रक्षितः।[13]

समकालीन राजनीति में महाभारत एवं अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

वर्तमान परिपेक्ष्य में यदि देखा जाए तो राजनीति अनेक बाधाओं से गिरी हुई है जिसमें नैतिक मूल्यों का ह्रास,भ्रष्टाचार,राष्ट्रीय सुरक्षा व अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा जैसे समस्याएं समस्त विश्व के समक्ष विद्यमान है। इन विकट परिस्थितियों में भारतीय राजनीतिक ग्रन्थो में निहित सिद्धान्तों का आश्रय लेना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। महाभारत का राजधर्म न्याय एवं उत्तरदायित्व पर आधारित है, जबकि अर्थशास्त्र सुशासन, प्रशासनिक दक्षता, व दूरदर्शिता के लिए बहुत उपयोगी मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है। इस प्रकार इन दोनों ग्रन्थो में प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धान्तों का केवल ऐतिहासिक महत्व ही नहीं है अपितु समकालीन शासन व्यवस्था में भी ये सिद्धान्त अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होते हैं।

- ### सुशासन एवं राजनीति प्रशासन में प्रासंगिकता

अर्थशास्त्र एवं महाभारत में सुशासन को प्रजा लिए कल्याणकारी माना गया है। इन ग्रन्थो में वर्णित सिद्धान्तों की प्रासंगिकता वर्तमान में भी प्रभावी प्रतीत होती है।महाभारत में भी भीष्म युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं -

लोकरञ्जनमेवात्र राज्ञां धर्मः सनातनः।

सत्यस्य रक्षणं चैव व्यवहारस्य चार्जवम्॥[14]

अर्थात् इस लोक में प्रजा को प्रसन्न रखना है ही राजा का परम धर्म है यदि राजा अपनी प्रजा के पालन में असमर्थ है तो वह सुयोग्य राजा नहीं माना जा सकता। अतः राजा को प्रजा की सुरक्षा व पालन पोषण हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए।

वर्तमान लोकतांत्रिक प्रणाली में भी सरकारों का आकलन शिक्षा, रोजगार,सामाजिक सुरक्षा के मानदंडों पर किया जाता है। वर्तमान में प्रचलित **"सबका साथ-सबका विकास",** तथा **"सतत विकास"** जैसी अवधारणाएँ प्राचीन भारतीय राजनीति की ही समकालीन व्याख्याएं हैं।

- ### राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सैन्य नीति में प्रासंगिकता

---

[12] महाभारत कर्ण पर्व 69/59

[13] महाभारत वनपर्व 313/128

[14] महाभारत शांति पर्व 57/11

कौटिल्य ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोपरि माना है। राज्य के सप्तांगों में सेना व दुर्ग को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कौटिल्य के अनुसार शक्तिशाली सैन्य व्यवस्था, सुरक्षित राज्य सीमाएं एवं व्यवस्थित गुप्तचर व्यवस्था ही राष्ट्रीय सुरक्षा का प्रमुख आधार है।

राज्य सुरक्षा का वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है-

पुत्रा इव पितुर्गेह विषये यस्य मानवाः:।

निर्भया विचरिष्यन्ति स राजा राजसत्तमः॥[15]

जिस प्रकार से संतान अपने पिता के आश्रय में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करती है, उसी प्रकार पर से प्रजा एक सुयोग्य राजा के आश्रम में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करती है।

वर्तमान सैन्य नीति के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सीमा सुरक्षा, सामरिक सन्धियों जैसे विषय कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी वर्णित है। आज भी राष्ट्रीय अपनी सुरक्षा हेतु गुप्तचर व आंतरिक नीतियों का उपयोग करते हैं जो अर्थशास्त्रीय विचारों व सिद्धांतों से प्रेरित प्रतीत होते हैं।

भ्रष्टाचार उन्मूलन में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है और यह शासन व्यवस्था में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है।कौटिल्य लगभग 2500 वर्ष पूर्व ही इस समस्या की गम्भीरता से अवगत हो गए थे। उनके मतानुसार -

यथा ह्यनास्वादयितुं न शक्यं जिह्वातलस्थं मधु वा विषं वा ।

अर्थस्तथा ह्यर्थचरेण राज्ञः स्वल्पोऽप्यनास्वादयितुं न शक्यः ॥[16]

अर्थात् जिस प्रकार जिह्वा पर रखे गए मधु का स्वाद ग्रहण किए बिना रहना असंभव है, इस प्रकार राजकोष के संपर्क में रहने वाले अधिकारियों का सार्वजनिक धन के दुरुपयोग से बचाना अत्यंत कठिन है। आज के युग में लोकपाल, कैग,सूचना का अधिकार,डिजिटल प्रशासन जैसी प्रशासनिक व्यवस्थाएं भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु कार्यरत हैं वह पारदर्शिता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रही है।

- ## विदेश नीति एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध

वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में कूटनीति और विदेश नीति का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त तथा षाड्गुण्य नीति के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का अत्यन्त व्यावहारिक वर्णन प्रस्तुत किया है।षाड्गुण्य नीति के अन्तर्गत उन्होंने छह उपाय बताए

सन्धिर्विग्रह आसनं यानं संश्रय एव च।

द्वैधीभावस्तथैव च षाड्गुण्यमिति कीर्तितम्॥[17]

---

[15] महाभारत शांति पर्व 57/33

[16] अर्थशास्त्रम् 2/25/15

[17] महाभारत शांति पर्व 57/16

अर्थात् सन्धि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय तथा द्वैधीभाव ये विदेश नीति के छह प्रमुख उपाय हैं।

आज भारत की"Neighbourhood First Policy","Act East Policy", सामरिक साझेदारी, G-20, QUAD तथा बहुपक्षीय कूटनीति में कौटिल्य के यथार्थवादी दृष्टिकोण की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

निष्कर्ष : -

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष ज्ञात होता है कि महाभारत एवं कौटिलीय अर्थशास्त्र भारतीय राजनीतिक चिन्तन की दो ऐसी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं, जिनमें शासन, प्रशासन, न्याय, कूटनीति, विदेश नीति तथा लोककल्याण के सिद्धान्तों का समग्र एवं व्यावहारिक वर्णन मिलता है। महाभारत राजनीति को धर्म, नैतिकता, न्याय तथा प्रजाहित से जोड़ता है, जबकि कौटिलीय अर्थशास्त्र राज्य की सुरक्षा, प्रशासनिक दक्षता, आर्थिक सुदृढ़ता, गुप्तचर व्यवस्था तथा विदेश नीति के यथार्थवादी स्वरूप को प्रस्तुत करता है। यद्यपि दोनों ग्रन्थों की कार्यप्रणाली भिन्न प्रतीत होती है, तथापि उनका मूल उद्देश्य प्रजा का हित , राज्य में शान्ति तथा सुशासन की स्थापना है। इस प्रकार वर्तमान लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार नियंत्रण, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रीय सुरक्षा जैसी चुनौतियों के समाधान हेतु महाभारत और अर्थशास्त्र के सिद्धान्त अत्यंत उपयोगी हैं। ये ग्रन्थ आधुनिक शासन के लिए मार्गदर्शक एवं सुशासन की स्थापना के प्रेरणास्रोत कहे जा सकते है